काव्यशास्त्रों में शब्दालङ्कारों का अध्ययन

सविता सिंह

साहित्य जगत में कविवाणी का वह सौन्दर्यसाधन जो काव्य में लावण्य की सृष्टिकर उसे अनुभूतिपरक बनाता हो, अलङ्कार कहलाता है। काव्यशास्त्रों में रमणीयता की दृष्टि से अलङ्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है।

अलङ्कार शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार दी जा सकती है–''अलं करोति इति अलङ्कारः'' जिसे देखते ही सहृदयगण कह उठे 'अलम्' अर्थात् इससे अधिक सौन्दर्य अन्यत्र नहीं है, वही अलङ्कार है। संकुचित अर्थ में अलङ्कारों को ''अलङ्करणम् अलङ्कारः'' अर्थात आभूषण ही अलङ्कार है, यह अर्थ लिया जाता है।